# साखी

## (कबीर के दोहे)

**ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोइ।**

**अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ।।**

अर्थ- कबीर कहते है कि हमें अपने मन का अहंकार छोड़कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिससे हमारा अपना तन- मन भी शीतल रहे और दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

**कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।**

**ऐसैं घटि- घटि राँम है , दुनियां देखै नाँहिं।।**

अर्थ- कबीरदास जी कहते है कि जैसे हिरण कस्तूरी की सुगंध को जंगल में खोजता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में रहती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण-कण में ईश्वर है लेकिन मनुष्य ईश्वर को बाहर देवालयों और तीर्थों में ढूंढता है जबकि वह उसी के ह्रदय में रहता है l कबीर जी कहते है कि अगर ईश्वर को खोजना ही है तो अपने मन में खोजो।

**जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।**

**सब अँधियारा मिटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।**

अर्थ- कबीर जी कहते हैं कि जब तक दिल में 'मैं ' अर्थात अहंकार था तब इसमें ईश्वर नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब ज्ञान का दीपक ह्रदय में जला तो अज्ञान और अहंकार का अंधकार मिट गया l

**सुखिया सब संसार है , खायै अरु सोवै।**

**दुखिया दास कबीर है , जागै अरु रोवै।।**

अर्थ- कबीर जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान होकर सोए हुए हैं। ये सब देख कर कबीर दुखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में जागते रहते हैं।

**बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ।**

**राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ।।**

अर्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि जब भक्त  के मन में अपने भगवान के बिछड़ने का दुःख सांप बन कर लोटने  लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र या  उपाय  असर करता है और न ही कोई दवा असर करती है। उसी तरह राम अर्थात ईश्वर के वियोग में भक्त जीवित नहीं रह सकता और यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों  जैसी हो जाती है।

**निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।**

**बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ।।**

अर्थ- इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि जो हमारी निंदा करे, हमारे दोष बताए, उसे  अपने पास अपने घर के आँगन में झोपड़ी बनाकर उसमे रखना चाहिए। क्योंकि वह हमारे दोषों को बताकर बिना पानी और साबुन के ही हमारे ह्रदय को निर्मल बना देता है l

**पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।**

**ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ।**

अर्थ- कबीर जी कहते है कि इस संसार में मोटी - मोटी पुस्तकें (किताबें ) पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी मनुष्य पंडित (ज्ञानी ) नहीं बन सका।  यदि किसी व्यक्ति ने ईश्वर प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता अर्थात ईश्वर को प्रेम से ही पाया जा सकता है

**हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराड़ा हाथि।**

**अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।**

अर्थ- कबीरजी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने सांसारिक सूख और मोह -माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है।  अब उनके हाथों में जलती हुई लकड़ी अर्थात ज्ञान की मशाल है। अब वे उसका घर जलाएँगे जो उनका अनुयायी है ,उनके साथ चलना चाहता है अर्थात उसे भी मोह-माया से मुक्त होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। ईश्वर की प्राप्ति सांसारिक सुखों का त्याग करके ही संभव है l